अध्याय 9

विपत्तियाँ: पशुओं का रोग, फफोले, और ओले

निर्गमन 9 में तीन विपत्तियाँ दर्ज हैं - पाँचवीं विपत्ति (पशुओं का रोग), छठीं (मनुष्यों और पशुओं के फफोले), और सातवीं (ओले)। यहोवा ने मूसा को एक बार फिर से निर्देश दिए और उसे फ़िरौन के सामने जाकर उससे इस्राएल को जाने की अनुमति देने को कहा। उसे फ़िरौन को बताना था, कि यदि उसने विनती अस्वीकार की, तो परमेश्वर मिस्र के पशुओं पर एक घातक मरी (महामारी) भेजेगा परन्तु इस्राएल के पशुओं को छोड़ देगा (9:1-4)। जैसा कि परमेश्वर ने कहा था, अगले दिन मिस्रियों के ऊपर विपत्ति आ पड़ी (9:5, 6)। हालाँकि, फ़िरौन ने फिर भी इस्राएल को स्वतंत्र करने से मना कर दिया (9:7)।

आगे, आने वाले समय में परमेश्वर ने मिस्रियों को बिना चेतावनी दिए मनुष्यों और पशुओं पर फफोलों की विपत्ति भेजी। यह विपत्ति इतनी व्यापक थी कि इसने मिस्र के जादूगरों को भी प्रभावित किया और उन्हें आँगन में अपना स्थान लेने से रोके रखा। यह पीड़ादायक अनुभव भी फ़िरौन को इस्राएलियों को जाने की अनुमति देने के लिए राज़ी नहीं कर सका (9:8-12)।

अध्याय में तीसरी विपत्ति की भूमिका परमेश्वर द्वारा उसके उद्देश्य की घोषणा किए द्वारा लिखी गई है। एक बार फिर से इस्राएल की स्वतन्त्रता की मांग करने के द्वारा परमेश्वर ने एक और विपत्ति भेजने की चेतावनी दी। तो भी, इस बार उसने घोषणा की और कहा कि यह विपत्ति मिस्र को यहोवा और उसकी अनोखी शक्ति के बारे में जानना सिखाएगी, ताकि उसका नाम प्रकट हो सके (9:13-16)। फ़िरौन की ढिठाई के कारण, परमेश्वर ने कहा कि वह ओलों की विपत्ति भेजेगा जो सारी फसलों को नष्ट कर देगी और जो भी मनुष्य या पशु खुले में होगा उसे मार डालेगी। इस पूर्व चेतावनी ने विश्वासियों, यहाँ तक कि मिस्रियों के बीच से भी, ओलों से बच निकलना सम्भव बना दिया (9:17-21)।

यह चेतावनी एक वास्तविकता बन गई, और केवल उस क्षेत्र को छोड़कर जहाँ इस्राएली रहते थे, सारे मिस्र में ओले गिरे (9:22-26)। इसके परिणाम स्वरूप फ़िरौन पहली बार स्वीकार किया कि उसने बुरा किया था। इसके बाद उसने (फिर से) कहा कि वह इस्राएल को जाने देगा (9:27, 28)। मूसा ने ओलों को रोक दिया, परन्तु उसने कहा कि वह जानता था कि फ़िरौन वास्तव में यहोवा का भय नहीं

मानता (9:29-33)। एक बार फिर, जब उसे विपत्ति से आराम मिला, तो फ़िरौन ने अपना मन बदला और मूसा की विनती अस्वीकार कर दी (9:34, 35)।

पशुओं पर मरी का आना (9:1-7)

[1]फिर यहोवा ने मूसा से कहा, "फ़िरौन के पास जाकर कह, 'इब्रियों का परमेश्वर यहोवा तुझ से इस प्रकार कहता है: मेरी प्रजा के लोगों को जाने दे कि मेरी उपासना करें। [2]और यदि तू उन्हें जाने न दे और अब भी पकड़े रहे, [3]तो सुन, तेरे जो घोड़े, गदहे, ऊँट, गाय-बैल, भेड़-बकरी आदि पशु मैदान में हैं, उन पर यहोवा का हाथ ऐसा पड़ेगा कि बहुत भारी मरी होगी। [4]परन्तु यहोवा इस्राएलियों के पशुओं में और मिस्रियों के पशुओं में ऐसा अन्तर करेगा कि जो इस्राएलियों के हैं उनमें से कोई भी न मरेगा'।" [5]फिर यहोवा ने यह कहकर एक समय ठहराया, "मैं यह काम इस देश में कल करूँगा।" [6]दूसरे दिन यहोवा ने ऐसा ही किया; और मिस्रियों के तो सब पशु मर गए, परन्तु इस्राएलियों का एक भी पशु न मरा। [7]और फ़िरौन ने लोगों को भेजा, पर इस्राएलियों के पशुओं में से एक भी नहीं मरा था। तौभी फ़िरौन का मन कठोर हो गया, और उसने उन लोगों को जाने न दिया।

आयतें 1-3. डांसों के झुण्ड के चले जाने के बाद और **फ़िरौन** के एक बार फिर अपना हृदय कठोर करने के बाद, परमेश्वर ने **मूसा** के द्वारा उसके पास एक वचन भेजा कि उसे इस्राएल देश को छोड़ कर जाने की अनुमति देनी होगी या परिणाम स्वरूप उसे मिस्र के **पशुओं** के ऊपर **एक भारी मरी** का सामना करना होगा। इब्रानी शब्द דֶּבֶר *(देबेर)*, जिसका अनुवाद "मरी" या "पशुओं के संक्रामक रोग" (KJV) में किया गया है, यह एक व्यापक महामारी के लिए उपयोग किया जाने वाला शब्द है जो बीमारी के विशिष्ट स्वभाव का कोई संकेत नहीं देता। "पशु" מִקְנֶה *(मिक्नेह)* शब्द, जिसका अनुवाद "मवेशी" (KJV) में भी हुआ है, यह एक विस्तृत शब्द है जिसमें वे सभी पशु सम्मिलित हैं जो प्रभावित होंगे[1]: **घोड़े, गधे, ऊँट, गाय-बैल** ("मवेशी"; NIV), और **पशुओं के समूह** ("भेड़ और बकरियाँ"; NIV)। एक बार फिर, लेखक ने उस बात का वर्णन किया जिसे परमेश्वर ने मूसा को फ़िरौन से कहने के लिए कहा था, और इसके बाद उसने इसका निष्कर्ष पाठक पर छोड़ दिया कि मूसा वास्तव में मिस्र के राजा के पास संदेश लेकर गया था (8:1, 2 पर टिप्पणियाँ देखें)।

आयतें 4, 5. यह विपत्ति **यहोवा** की ओर से आई थी इसके प्रमाण भरपूर मात्रा में थे। पहला, परमेश्वर का हाथ इस विपत्ति की कठोरता में देखा गया था, क्योंकि यह सभी प्रकार के पशुओं की मृत्यु का कारण थी (9:3)। दूसरा, विपत्ति का चमत्कारी स्वभाव स्पष्ट तौर पर इसकी चयनात्मकता में था: परमेश्वर ने मिस्रियों को पीड़ा दी, परन्तु इस्राएलियों को नहीं (8:22 पर टिप्पणियाँ देखें)। तीसरा, विपत्ति के समय ने यह संकेत किया कि परमेश्वर का इस पर नियंत्रण था: मूसा ने कहा यह **"कल"** घटित होगी - और ऐसा ही हुआ।

यह पहले बीत चुकी विपत्तियों से अलग थी, इसका परिणाम प्राणों की हानि था (पशुओं का प्राण) और मिस्रियों के विषय में इसका तात्पर्य जीविका की हानि थी। उन्हें मांस और देश में खेती करने के लिए अपने पशुओं की आवश्यकता थी। यदि उनके पशु मर गए, तो उनका भोजन का स्रोत खतरे में पड़ सकता था। जॉन जे. डेविस ने टिप्पणी कि और कहा कि यह विपत्ति "उनकी व्यक्तिगत सम्पत्ति से इसके सम्बन्ध के हिसाब से अनोखी थी। इस समय से पहले विपत्तियों का प्रभाव झुंझलाहट और पीड़ा तो था, परन्तु व्यापक तौर पर निजी सम्पत्ति की हानि नहीं था।"[2]

मिस्री संस्कृति में बहुत से पशुओं का उपयोग देवताओं को दर्शाने के लिए किया जाता था। सम्भवतः पशुओं को स्वयं देवताओं के रूप में नहीं देखा जाता था परन्तु उन्हें देवताओं के प्रकटीकरण और पात्रों के रूप में देखा जाता था। कुछ उदाहरण जो वर्तमान शब्द से मेल खाते हैं उनमें गाय (हाथोर की प्रतिनिधि), सांड (एपीस, म्नेविस, या प्ताह का प्रतिनिधि), और मेढ़ा (अमुन या खनुम का प्रतिनिधि)। पवित्र पशुओं को अकसर मन्दिरों के साथ जोड़ा जाता और उनकी देखभाल पुजारियों के द्वारा की जाती थी। इनमें से बहुत से पशुओं को उनकी मृत्यु के बाद ममी बना दिया जाता था, यह एक ऐसा अनुष्ठान था जो उन आराधकों के द्वारा किया जाता था जो अपने देवता के आशीर्वाद की खोज में थे।

आयत 6. कोई भी इस बात को पूरी तरह से नहीं जान सकता कि किस रोग ने मिस्र के पशुओं को प्रताड़ित किया था। कुछ विद्वान कहते हैं कि यह एंथ्रेक्स था।[3] हालाँकि, जॉन आई. डरहम ने मरी की पहचान किसी अन्य विशिष्ट रोग के साथ करने की परिकल्पनाओं के विरुद्ध तर्क दिया क्योंकि ऐसा करना "बाइबल के विवरण के धार्मिक वर्णन को अस्वीकार कर देता है, जो कि कोई प्राकृतिक और इसलिए गैर-चमत्कारी 'स्पष्टीकरण स्वीकार नहीं करेगा।"[4] यह चाहे कुछ भी रहा हो, यह मिस्र के पशुओं के लिए प्राण घातक था। हालाँकि, चूँकि बाद में जब मिस्र पर ओलों की विपत्ति पड़ी तो पशुओं में से कुछ अब भी जीवित थे (9:19-21), तो यह कथन कि **मिस्रियों के तो सब पशु मर गए** इसका अर्थ अवश्य "बड़ी संख्या में" रहा होगा। विल्बर फ़ील्ड्स ने लिखा, "ऐसा प्रतीत होगा कि 9:6 में शब्द *सब* (8:17 के समान) इसे एक पूर्ण अर्थ के समान नहीं लेना चाहिए, बल्कि इसे एक बड़े भाग के सन्दर्भ के समान लेना चाहिए कि जो बाकी शेष रह गया था वह उसकी तुलना में कुछ भी नहीं था।"[5] शब्द "सब" को अकसर विपत्तियों का वर्णन करने के लिए अतिशयोक्ति के रूप में उपयोग किया गया है, जिस प्रकार वर्तमान में लोग "सब" और "सभी" को "बहुत सारे," "अधिकांश," या "बड़ी संख्या" का सन्दर्भ देने के लिए उपयोग करते हैं।

आयत 7. जब मिस्रियों के पशु मरे, तो इस्राएलियों के पशु बच गए थे।[6] फ़िरौन को यह नहीं बताया गया था कि यहोवा "इस्राएल के पशुओं और मिस्र के पशुओं में अंतर करेगा" (9:4)। उसने निस्संदेह इन अफवाहों को सुना था कि इस्राएल के पशु प्रभावित नहीं हुए थे। इसकी प्रतिक्रिया स्वरूप, **फ़िरौन** ने गोशेन में अफवाहों को सुनिश्चित करने के लिए दूत भेजे। हालाँकि, **इस्राएलियों का एक**

पशु भी नहीं [मरा पाया गया था] **मरा था** उसके सेवकों के इस समाचार ने भी उसे इस्राएल के प्रति अपना मन बदलने के लिए आश्वस्त नहीं किया था। उसका **हृदय ... कठोर हो गया था**, और उसने एक बार फिर इस्राएल के लोगों को जाने से मना कर दिया।

यह देखने के लिए कि इस्राएलियों के पशु अब भी जीवित थे कि नहीं फ़िरौन ने दूत "भेजे" (שָׁלַח, *शालाक)* यह कहने के लिए उसी साधारण इब्रानी शब्द का उपयोग किया गया है जो उस आयत 1 में उस समय उपयोग किया गया था जब मूसा ने फ़िरौन से लोगों को जाने देने की मांग की थी। डरहम ने इस वाक्यांश का अनुवाद "मेरे लोगों *को बाहर भेज दे"* (बल दिया गया है) के रूप में किया है।[7] उसने कहा कि फ़िरौन का कठोर हृदय यह वर्णन करता है कि क्यों "फ़िरौन ऐसे लोगों को बाहर भेजेगा जिन्हें बाहर भेजने की उसे कोई आवश्यकता नहीं हैं, गोशेन के विषय में उसका सत्य का पता लगाना, और उन लोगों को बाहर भेजने से इनकार करना जिन्हें बाहर भेजने की आज्ञा उसे याहवेह ने दी थी, ताकि इस्राएल के पुत्र अपनी धार्मिक प्रतिबद्धता को पूरा कर सकें।"[8]

फफोले (9:8-12)

[8]फिर यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, "तुम दोनों भट्ठी में से एक-एक मुट्ठी राख ले लो, और मूसा उसे फ़िरौन के सामने आकाश की ओर उड़ा दे। [9]तब वह सूक्ष्म धूल होकर सारे मिस्र देश में मनुष्यों और पशुओं दोनों पर फफोले और फोड़े बन जाएगी।" [10]इसलिये वे भट्ठी में की राख लेकर फ़िरौन के सामने खड़े हुए, और मूसा ने उसे आकाश की ओर उड़ा दिया, और वह मनुष्यों और पशुओं दोनों पर फफोले और फोड़े बन गई। [11]उन फोड़ों के कारण जादूगर मूसा के सामने खड़े न रह सके, क्योंकि वे फोड़े जैसे सब मिस्रियों के वैसे ही जादूगरों के भी निकले थे। [12]तब यहोवा ने फ़िरौन के मन को कठोर कर दिया, और जैसा यहोवा ने मूसा से कहा था, उसने उसकी न सुनी।

आयतें 8-10. पाँचवीं विपत्ति ने मिस्रियों के पशुओं की देह को प्रभावित किया था; छठी ने मिस्रियों की देह के ऊपर प्रहार किया, और इसके साथ ही एक बार फिर से पशुओं को चोट पहुंचाई। **मूसा** ने **भट्ठी की राख** लेकर उसे हवा में उड़ा दिया, और जो धुल उसने बिखेरी थी वह **मनुष्यों और पशुओं पर ... फफोले और फोड़े बन गई**। विलियम ए. शैल के अनुसार, इस शब्द में जो इब्रानी शब्द כִּבְשָׁן *(किब्शान)* उपयोग किया गया है वह "बर्तनों को या चूने को मनचाही आकृति में ढालने के लिए आग में तापने की भट्ठी थी।"[9] "फफोला" שְׁחִין *(शे खिन)* शब्द त्वचा की जलन और सूजन की कई किस्मों का सन्दर्भ देता है जिनके कारण अशुद्धता, अत्यधिक पीड़ा, और संभावित तौर पर मृत्यु भी हो सकती है (लैव्य. 13:18-20; अय्यूब 2:7; 2 राजा 20:1, 7)। कई बार ये फफोले एक मनुष्य के पूरे शरीर को ढांप लेते थे, "उसके पाँव की तली से उसके सिर की छोटी तक" (अय्यूब 2:7; देखें

व्यव. 28:35)। "पशु" (בְּהֵמָה, *बे हेमाह)* शब्द में घरेलू और जंगली पशु भी सम्मिलित हो सकते हैं।

मूसा के कार्य को एक दृश्य प्रसाधन समझना यह सोचने से बेहतर है कि धूल का एक बादल सारे देश पर फ़ैल गया, और जाकर मनुष्यों और पशुओं को पीड़ा पहुंचाई। सम्भव है कि जैसे ही मूसा ने हवा में धूल को उड़ाया, इसने जिस किसी को भी स्पर्श किया वे इसके द्वारा पीड़ित हो गए, और वहाँ से विपत्ति फ़ैल गई। कुछ विद्वान सुझाव देते हैं कि मूसा का राख को "सांकेतिक रूप से हवा में छिड़कना (9:10) आने वाली घटनाओं में मिस्र के हवा के देवता (शो [या शु]) की असहाय परिस्थिति का प्रदर्शन करता है।"[10] संभवतः मवाद से भरे फफोलों ने औषधि के देवता इमोहटेप, की दुर्बलता को भी प्रकट कर दिया था।

शब्द मूसा के द्वारा **फ़िरौन** से की गई मांग या उसे दी गई सुनने योग्य चेतावनी दर्ज नहीं करता, जैसा चौथी विपत्ति के समय हुआ था जो डांसों के झुण्ड लेकर आई थी (8:24 पर टिप्पणियाँ देखें)। हालाँकि, मूसा और फ़िरौन के मध्य किसी मौखिक मुठभेड़ की अनुपस्थिति यह प्रमाणित नहीं करती कि ऐसा कुछ नहीं हुआ था। वह तथ्य जो 12वीं आयत कहती है कि फ़िरौन "ने उनकी नहीं सुनी" संकेत करता है कि मूसा और हारून ने, वास्तव में उससे, बात की और इस्राएल की मुक्ति की विनती की थी।

आयत 11. विपत्ति की शक्ति पर इस तथ्य के द्वारा बल दिया गया है कि **जादूगर** स्वयं फफोलों से इस हद तक पीड़ित हो गए थे कि वे **मूसा के सामने खड़े न रह सके**। यह कथन संकेत करता है कि जब मूसा फ़िरौन के सामने उपस्थित हुआ, तो जादूगर उसके कार्यों की नकल करने हेतु वहाँ उपस्थित थे। निर्गमन की पुस्तक का प्रमाण यह संकेत करता है कि वे फ़िरौन के आँगन का भाग थे (देखें उत्पत्ति 41:8, 24)। एक निष्पक्ष पर्यवेक्षक को यह निष्कर्ष निकालना पड़ा कि जादूगरों को जो शक्तियां दी गईं, वे मूसा, हारून और इस्राएल से जुड़े लोगों के बराबर नहीं थीं, क्योंकि जादूगरों की शक्तियां उन्हें मूसा के परमेश्वर के आक्रमण से नहीं बचा सकती थीं। इस आयत में जादूगरों की अंतिम उपस्थिति दर्ज की गई है।

आयत 12. जब लेखक ने छठी विपत्ति के बाद फ़िरौन के इनकार का वर्णन किया, तो उसने इस श्रृंखला में पहली बार यह कहा कि **यहोवा ने फ़िरौन के मन को कठोर कर दिया**। केवल फ़िरौन के बलवा करने वाले, अभिमानी स्वभाव के बाद ही यहोवा ने संभवतः उसके ढीठ लक्षणों को और भी बुरा करने के द्वारा, उसका हृदय कठोर कर दिया था। एक बार फिर, चूँकि परमेश्वर ने पहले ही इसकी भविष्यद्वाणी की थी, इसीलिए शब्द इस तथ्य पर बल देता है कि फ़िरौन का इनकार एक आश्चर्य के रूप में नहीं आया होगा (7:3, 4; 8:15 पर टिप्पणियाँ देखें)।

ओले (9:13-35)

ओलों के विषय में चेतावनी (9:13-21)

[13]फिर यहोवा ने मूसा से कहा, "सबेरे उठकर फ़िरौन के सामने खड़ा हो, और उससे कह, 'इब्रियों का परमेश्वर यहोवा इस प्रकार कहता है: मेरी प्रजा के लोगों को जाने दे कि वे मेरी उपासना करें। [14]नहीं तो अब की बार मैं तुझ पर और तेरे कर्मचारियों और तेरी प्रजा पर सब प्रकार की विपत्तियाँ डालूँगा, जिससे तू जान ले कि सारी पृथ्वी पर मेरे तुल्य कोई दूसरा नहीं है। [15]मैं ने तो अभी हाथ बढ़ाकर तुझे और तेरी प्रजा को मरी से मारा होता, और पृथ्वी पर से तेरा सत्यानाश हो गया होता; [16]परन्तु सचमुच मैं ने इसी कारण तुझे बनाए रखा है कि तुझे अपनी सामर्थ्य दिखाऊँ, और अपना नाम सारी पृथ्वी पर प्रसिद्ध करूँ। [17]क्या तू अब भी मेरी प्रजा के सामने अपने आप को बड़ा समझता है, और उन्हें जाने नहीं देता? [18]सुन, कल मैं इसी समय ऐसे भारी-भारी ओले बरसाऊँगा, जिनके तुल्य मिस्र की नींव पड़ने के दिन से लेकर अब तक कभी नहीं पड़े। [19]इसलिये अब लोगों को भेजकर अपने पशुओं को और मैदान में जो कुछ तेरा है सब को फुर्ती से आड़ में छिपा ले; नहीं तो जितने मनुष्य या पशु मैदान में रहें और घर में इकट्ठा न किए जाएँ उन पर ओले गिरेंगे, और वे मर जाएँगे'।" [20]इसलिये फ़िरौन के कर्मचारियों में से जो लोग यहोवा के वचन का भय मानते थे उन्होंने अपने-अपने सेवकों और पशुओं को घर में हाँक दिया। [21]पर जिन्होंने यहोवा के वचन पर मन न लगाया उन्होंने अपने सेवकों और पशुओं को मैदान में रहने दिया।

आयत 13. जिस प्रकार उसने पहली और चौथी विपत्ति के समय किया था (7:15; 8:20), **यहोवा ने मूसा** को निर्देश दिए कि वह **सवेरे ही फ़िरौन** के सामने जाकर सातवीं विपत्ति की घोषणा करे। परमेश्वर ने इस बार विशिष्ट तौर पर यह नहीं बताया कि यह साक्षात्कार जल के निकट होने वाला था। शब्द यह नहीं बताता कि मूसा ने यहोवा के निर्देशों का पालन किया, परन्तु पाठक यह मान सकता है कि उसने किया था। मूसा की विनती बदलती नहीं: **"इब्रियों का परमेश्वर यहोवा इस प्रकार कहता है: मेरी प्रजा के लोगों को जाने दे कि वे मेरी उपासना करें।"**

आयत 14. जो व्याख्या मूसा प्रदान करने वाला था वह उस प्रत्येक संदेश के परे गई जो उसने अभी तक फ़िरौन तक पहुँचाया था। पहले, परमेश्वर ने यह स्पष्ट किया कि अन्य आपदाएं भी आएंगी, एक ऐसा सत्य जो उसने पहले फ़िरौन के सामने विशिष्ट तौर पर प्रकट नहीं किया था। **सब प्रकार की विपत्तियों** के विषय में बात करते हुए, परमेश्वर सम्भवतः उन "सभी" विपत्तियों का सन्दर्भ दे रहा था जो अभी भविष्य में रखी हुई थीं। दूसरा, परमेश्वर ने यह प्रकट किया कि वह फ़िरौन और उसके देश पर विपत्तियाँ क्यों भेज रहा था: **जिससे कि तू जान ले कि सारी पृथ्वी पर मेरे तुल्य दूसरा कोई नहीं है**। फ़िरौन यह जान लेगा कि परमेश्वर अनोखा था, और उसकी तुलना मिस्र के देवताओं के साथ नहीं की जा सकती थी।

आयतें 15, 16. वास्तव में, परमेश्वर ने कहा कि वह मिस्रियों को पूरी तरह से नाश कर सकता था - और ऐसा किया भी होता, इसके बजाए उसकी मंशा विपत्तियों का उपयोग कर उनके सामने अपनी **सामर्थ्य** का प्रदर्शन करने की थी। इस प्रदर्शन के कारण, यहोवा के **नाम** की घोषणा **सारी पृथ्वी पर** हो जाएगी। वाल्डमर जेनज़ेन ने टिप्पणी की,

> परमेश्वर का लक्ष्य केवल इस्राएल को उसके वर्तमान अत्याचार से स्वतंत्र करना नहीं था, यह ऐसा कार्य था जो परमेश्वर शीघ्र पूरा कर सकता था, परन्तु उसकी मंशा परमेश्वर का (एक मुक्तिदाता के रूप में परमेश्वर का चरित्र; 3:13-15; 20:1-2) नाम सारे संसार में प्रचार करने की थी। केवल मिस्र या इस्राएल ही नहीं बल्कि सभी देश एक ऐसे परमेश्वर के लौकिक नियम से परिचित होने वाले थे जो अत्याचार का विरोध करता है।[11]

निस्संदेह, मिस्र में परमेश्वर के सामर्थी कार्यों ने उन अन्यजाति देशों को बहुत प्रभावित किया जिनका सामना इस्राएल ने आने वाले वर्षों में किया था (18:1; यहोशू 2:10, 11; 9:9; 1 शमूएल 4:8)। नए नियम में, प्रेरित पौलुस ने 16वीं आयत का उल्लेख परमेश्वर की परम प्रधान शक्ति का मनोरंजक चित्रण करने के लिए किया (रोमियों 9:17)।

आयत 17. इसके बाद परमेश्वर ने फ़िरौन के पाप का उपचार किया: **"क्या तू अब भी मेरी प्रजा के सामने अपने आपको बड़ा समझता है, और उन्हें जाने नहीं देता।"** फ़िरौन की समस्या घमंड और अभिमान था; उसने ऐसे लोगों के परमेश्वर से आदेश लेने से इनकार कर दिया जिन्हें वह तुच्छ समझता था।

आयत 18. इसके बाद मूसा ने विपत्ति के आगमन की घोषणा की, अभी तक के सबसे विनाशकारी **ओले** जो **मिस्र ने** अब तक देखे थे। **मिस्र की नींव पड़ने के दिन से लेकर अब तक** यह वाक्यांश इतिहास के एक चक्रीय दृश्य के विपरीत, एक रेखागत दृश्य का चित्रण करता है। इसी के समान भाव समस्त पवित्रशास्त्र में मिलते हैं (10:6; गिनती 14:19; एज्रा 9:7: यिर्म. 7:25; 32:31; मत्ती 24:21; फिलि. 1:5)।

आयत 19. यह विशिष्ट घोषणा भिन्न थी। इस अवसर पर मूसा ने मिस्रियों के सामने उनके लोगों और **पशुओं** के जीवन को बचाने का अवसर प्रस्तुत किया। यह जानकर की ओले आने वाले थे (और कब आने वाले थे), मिस्री अपने सेवकों और पशुओं को खलिहानों और घरों में शरण दे सकते थे ताकि उनका जीवन बच सके।

आयतें 20, 21. लेखक इसके बाद कहानी के अंत पर यह बताने के लिए चला गया कि क्या हुआ था। कुछ लोगों ने पवित्र परमेश्वर विश्वास किया और अपने **सेवकों** और **पशुओं** का जीवन बचा लिया। अन्य लोगों ने यहोवा के संदेश पर ध्यान नहीं दिया: और सम्भवतः, जब ओले आए तो उनके लोग और पशु मारे गए।

यहाँ पर एक आश्चर्यजनक कथन कहा गया है: कुछ मिस्रियों ने **यहोवा के वचन का भय माना**। इन्हीं मिस्रियों को **फ़िरौन के कर्मचारी** कहा गया है। परमेश्वर ने, अपने प्रभाव से, फ़िरौन के सेवकों में से भी कुछ अनुयायी बना लिए थे! विवरण

में पहले और बाद में भी, फ़िरौन के "सेवकों" और "लोगों" में अंतर किया गया है (8:3, 21; 9:14; 10:6; 11:3; 12:30)। इनमें सबसे अधिक सम्भावना यह है कि ये सरकारी कर्मचारी थे जो उसके आँगन में फ़िरौन के सलाहकार और सदस्यों के रूप सेवा किया करते थे (7:10, 20; 9:30, 34; 10:7; 11:8; 14:5)। इस प्रकार, वे, "फ़िरौन को जो भी पता चलता था उसका भेद जानते थे।"[12] इस अवसर पर, राजा के उन कर्मचारियों में से जिन्होंने मूसा की चेतावनी सुनी थी कुछ ने उसके अनुसार कार्य किया।

ओलों की बरसात (9:22-26)

[22]तब यहोवा ने मूसा से कहा, "अपना हाथ आकाश की ओर बढ़ा कि सारे मिस्र देश के मनुष्यों, पशुओं, और खेतों की सारी उपज पर ओले गिरें।" [23]तब मूसा ने अपनी लाठी को आकाश की ओर उठाया, और यहोवा की सामर्थ्य से मेघ गरजने और ओले बरसने लगे और आग पृथ्वी तक आती रही। इस प्रकार यहोवा ने मिस्र देश पर ओले बरसाए। [24]जो ओले गिरते थे उनके साथ आग भी मिली हुई थी, और वे ओले इतने भारी थे कि जब से मिस्र देश बसा था तब से मिस्र भर में ऐसे ओले कभी न गिरे थे। [25]इसलिये मिस्र भर के खेतों में क्या मनुष्य, क्या पशु, जितने थे सब ओलों से मारे गए, और ओलों से खेत की सारी उपज नष्ट हो गई, और मैदान के सब वृक्ष भी टूट गए। [26]केवल गोशेन प्रदेश में जहाँ इस्राएली बसते थे ओले नहीं गिरे।

आयतें 22, 23. आने वाली विपत्ति की घोषणा के बाद, **मूसा**, ने परमेश्वर की आज्ञा पर, **अपनी लाठी को आकाश की ओर उठाया** ताकि इस बात में कोई संदेह न रहे कि **यहोवा** ही **ओलों** के गिरने का कारण था। जब उसने यह मुद्रा बनाई, तो ओले गिरना आरम्भ हो गए। यह विपत्ति भी अन्यों के समान ही व्यापक थी: **मिस्र देश की समस्त भूमि पर, मनुष्य और पशु और प्रत्येक पेड़-पौधे ... और समस्त देश में** ओले गिरे।

आयतें 23-25. विपत्ति में केवल **ओलों** का मिश्रण ही नहीं; इसमें **मेघ गरजने**, बिजली और वर्षा भी सम्मिलित थी (9:33)। "गर्जन" का अनुवाद קוֹל *(कोल)* के बहुवचन रूप से हुआ है, एक ऐसा शब्द जो अकसर किसी की "वाणी" का संदर्भ देता है। यह यहोवा की वाणी की सामर्थ्य है जो आँधी की गर्जन के समान है (भजन 29:3)। **आग पृथ्वी तक आती रही** और ओलों के **साथ आग भी** गिरती थी, वर्णनात्मक वाक्यांशों के भीतर, शब्द "आग" אֵשׁ *('ऐश)* को "बिजली" के रूप में समझा जाना चाहिए (NIV; CEV; NCV)। यह देश के द्वारा अभी तक देखी गयी सबसे बुरी ओलों की आंधी थी, जिसने **मनुष्यों और पशुओं** पर प्रहार किया और यहाँ तक उन्हें मार भी डाला (9:19), और **प्रत्येक पौधे** और **पेड़** को भी नष्ट कर दिया (10:5 पर टिप्पणियाँ देखें)। मिस्रियों के द्वारा पूजे जाने वाले देवता लोगों की रक्षा करने के लिए कुछ नहीं कर सके - चाहे इसमें नट (आकाश की देवी).

आईसीस (जीवन की देवी), या सेथ (फसलों का रक्षक) ही क्यों न हो।

आयत 26. जिस प्रकार डांसों के झुण्ड की विपत्ति (8:22, 23) और पशुओं की मरी (9:4) में हुआ था, **गोशेन देश में** जहाँ इस्राएली रहा करते थे उसे छोड़ दिया गया था। परमेश्वर ने अपने लोगों और उनके सताने वालों के बीच में अंतर किया था।

ओले और गर्जन थम गए (9:27-35)

[27]तब फ़िरौन ने मूसा और हारून को बुलवा भेजा और उन से कहा, "इस बार मैं ने पाप किया है; यहोवा धर्मी है, और मैं और मेरी प्रजा अधर्मी हैं। [28]मेघों का गरजना और ओलों का बरसना तो बहुत हो गया; अब यहोवा से बिनती करो; तब मैं तुम लोगों को जाने दूंगा, और तुम न रोके जाओगे।" [29]मूसा ने उस से कहा, "नगर से निकलते ही मैं यहोवा की ओर हाथ फैलाऊंगा, तब बादल का गरजना बन्द हो जाएगा, और ओले फिर न गिरेंगे, इस से तू जान लेगा कि पृथ्वी यहोवा ही की है। [30]तौभी मैं जानता हूं, कि न तो तू और न तेरे कर्मचारी यहोवा परमेश्वर का भय मानेंगे।" [31]सन और जौ तो ओलों से मारे गए, क्योंकि जौ की बालें निकल चुकी थीं और सन में फूल लगे हुए थे। [32]पर गेहूं और कठिया गेहूं जो बढ़े न थे, इस कारण वे मारे न गए। [33]जब मूसा ने फ़िरौन के पास से नगर के बाहर निकल कर यहोवा की ओर हाथ फैलाए, तब बादल का गरजना और ओलों का बरसना बन्द हुआ, और फिर बहुत मेंह भूमि पर न पड़ा। [34]परन्तु यह देख कर कि मेंह और ओलों और बादल का गरजना बन्द हो गया फ़िरौन ने अपने कर्मचारियों समेत फिर अपने मन को कठोर कर के पाप किया। [35]इस प्रकार फ़िरौन का मन हठीला होता गया, और उसने इस्राएलियों को जाने न दिया; जैसा कि यहोवा ने मूसा के द्वारा कहलवाया था।

आयत 27. ओलों की विपत्ति मिस्रियों के अनुभव में अब तक का सबसे भयावाह प्रहार रहा होगा। पहली बार **फ़िरौन** ने अंगीकार किया कि उसने **पाप किया** है[13] - कि वह और उसकी **प्रजा अधर्मी** है तथा **यहोवा धर्मी** है। किंतु इसके बाद की घटनाएँ फ़िरौन के पश्चाताप पर संदेह लाती हैं। सम्भवतः अंगीकार करने के पीछे उसका उद्देश्य केवल विपत्ति से मुक्ति पाना था। यदि उसने यह समझा भी कि वह प्रभु के साथ इस प्रतियोगिता में गलत है, तो भी वह पुनः अपने अक्खड़ मार्गों पर आ गया। फ़िरौन के शब्द इस बात का स्मरण करवाते हैं कि "मैंने पाप किया है" कह देने मात्र से ही किसी के उद्धार होने की निश्चितता नहीं हो जाती है।

अपने अंगीकार में फ़िरौन ने यह कहकर कि "मैं और मेरी प्रजा अधर्मी हैं," अपनी प्रजा को अपने साथ सम्मिलित क्यों किया? एक रीति से प्रजा इस्राएलियों को दास बनाने के द्वारा "अधर्मी" थी। इस्राएलियों का सताव केवल फ़िरौन द्वारा अकेले ही संभव नहीं था। उसके दोष में वे भी इसलिए सम्मिलित थे क्योंकि उन्होंने संभवतः इस्राएल को जाने न देने के कठोर हृदय निर्णयों के लिए उसे प्रोत्साहित

किया था। उदाहरण के लिए, आयत 34 में वचन कहता है कि न केवल फ़िरौन ने पाप किया और अपना मन कठोर किया, वरन उसके कर्मचारियों ने भी किया।

आयत 28. जब उसने मूसा और हारून को अपने सामने प्रस्तुत होने के लिए बुलावा भेजा, तब फ़िरौन चिन्तित था कि ओले हटाए जाएँ। इसलिए उसने उन से कहा कि वे मिस्र के पक्ष में यहोवा से विनती करें। उसने एक बार फिर से प्रतिज्ञा दी कि मैं (इस्राएल को) **जाने दूंगा**।

आयत 29. मूसा सहमत हो गया, और सुनिश्चित किया कि मिस्री जान लें कि जैसे उसकी आज्ञा से ओले पड़ने आरंभ हुए थे, उसके निर्देश पर ही वे थम भी रहे हैं। उसने फिर से यह कहा कि यहोवा ने ही विपत्ति भेजी है और वही उसे हटाएगा भी, जिससे कि फ़िरौन यहोवा को **जान लेगा**। इस अवसर पर उसने यह निर्दिष्ट किया कि फ़िरौन जान लेगा कि **पृथ्वी यहोवा ही की है**। विपत्ति ने इस सत्य को प्रदर्शित किया: क्योंकि पृथ्वी यहोवा की है, इसलिए वही सारी प्रकृति का निर्देशक है और जहाँ चाहे वहाँ और जब चाहे तब ओले भेज सकता है। फ़िरौन को यह शिक्षा ओलों के तूफ़ान से ले लेनी चाहिए थी।

आयत 30. मूसा ने आगे कहा कि वह जानता था कि फ़िरौन और उसके **कर्मचारी** अभी भी **यहोवा का भय नहीं मानेंगे**। चाहे उस पल फ़िरौन गंभीर भी होता, मूसा ईश्वरीय प्रकाशन से जानता था कि फ़िरौन का मन और कठोर होगा तथा इसके अतिरिक्त और भी विपत्तियां भेजी जाएँगी।

आयतें 31, 32. वृतांत में इस बिंदु पर आ कर, लेखक न थोड़ा थम कर एक निक्षिप्त टिप्पणी जोड़ी जिसमें बताया गया कि जब ओले आए: **सन और जौ तो ओलों से मारे गए, क्योंकि जौ की बालें निकल चुकी थीं और सन में फूल लगे हुए थे। पर गेहूं और कठिया गेहूं जो बढ़े न थे, इस कारण वे मारे न गए।** डब्ल्यू. एच. गिस्पेन ने ध्यान किया कि, "मिस्र में सन कपड़ा बनाने के लिए उगाया जाता था (कपड़े का प्रयोग परिरक्षित शवों को लपेटने के लिए भी किया जाता था)। मिस्री जौ को रोटी पकाने के लिए प्रयोग करते थे।"[14] व्याख्याकार सहमत हैं कि वह समय लगभग जनवरी का होगा। अंतिम विपत्ति और छुटकारा मिलने का समय लगभग अप्रैल, फसह के पर्व का समय था। इसलिए अंतिम तीन विपत्तियों के लिए लगभग तीन माह शेष थे।

आयत 33. मूसा ने तब **यहोवा की ओर अपने हाथ फैलाए।** पुनः, यह भाव इस बात को प्रत्यक्ष कर देता था कि विपत्ति का अन्त करने का माध्यम मूसा था। इसके साथ ही, मूसा यह दिखा रहा था कि वह ओलों को केवल परमेश्वर से विनती कर के ही थाम सकता है। प्राचीन समय में लोग बहुधा अपने हाथ परमेश्वर की ओर फैलाकर प्रार्थना किया करते थे (1 राजा 8:22, 38, 54; एज्रा 9:5; भजन 44:20; 88:9; 143:6; यशा. 1:15; 1 तीमु. 2:8)। मूसा के प्रार्थना करने के बाद **गरजन** और **ओले** तुरंत ही थम गए होंगे।

आयतें 34, 35. विपत्ति को थम गया और आराम अनुभव कर के, **फ़िरौन** ने अपनी स्थिति का पुनः अवलोकन किया। हो सकता है कि उसने अपने आप से कुछ ऐसा कहा होगा: "ओले थम गए हैं; देश बच गया है। संभव है कि यह संयोग ही

हो, ऐसा इस समय होना ही था और हुआ। इससे मूसा और उसके यहोवा का कोई सरोकार नहीं है। और फिर, हम काम करने के लिए अपने दासों को खो नहीं सकते हैं। जो सबसे बुरा हमारे साथ हो सकता था हम उससे जीवित बच निकले हैं। मैं क्यों इस्राएल को जाने दूँ? मैं ऐसा नहीं करूँगा!" लेख तो बस इतना कहता है कि फ़िरौन ने, जब उसने देखा कि तूफ़ान थम गया है, **अपने कर्मचारियों समेत** अपने **मन को कठोर कर के** फिर से **पाप किया**, और **इस्राएलियों को जाने न दिया**। यह सब बिलकुल वैसा ही था जैसा यहोवा ने पहले से कह दिया था कि होगा।

अनुप्रयोग

"जातियों का परमेश्वर" (9:16)

विपत्तियों के वृतांत में, हम यह चौंका देने वाला कथन पाते हैं: "परन्तु सचमुच मैं ने इसी कारण तुझे बनाए रखा है, कि तुझे अपना सामर्थ्य दिखाऊं, और अपना नाम सारी पृथ्वी पर प्रसिद्ध करूं" (9:16)। यह आयत चौंका देने वाली हो सकती है क्योंकि हम यह सोचने के आदि नहीं हैं कि पुराने नियम का परमेश्वर "सारी पृथ्वी," अर्थात, इस्राएल के अतिरिक्त अन्य जातियों के विषय भी चिन्तित था। यह खण्ड सिखाता है कि परमेश्वर चाहता है कि वह जाना जाए, उसका नाम - जिससे उसके सामर्थ्य और बल का अभिप्राय है, वह "सारी पृथ्वी पर" घोषित हो। यद्यपि परमेश्वर का इस्राएल के साथ पुराने नियम में विशेष संबंध था, फिर भी वह सभी जातियों का परमेश्वर था।

परमेश्वर सभी जातियों को आशीषित करता है। जब नए नियम के प्रचारकों ने गैर-यहूदियों को संबोधित किया, तो उनके प्रचार का यह एक प्रमुख विषय था (प्रेरितों 14:16, 17; 17:25; देखें रोमियों 1:19-21)।

परमेश्वर जातियों की नियति नियंत्रित करता है। परमेश्वर ने 9:16 में स्पष्ट कहा कि फ़िरौन की नियति का अधिकार रखने वाला वह ही है: "मैं ने इसी कारण तुझे बनाए रखा है" (NRSV)। परमेश्वर राज्य करता है - न केवल अपने आज्ञाकारी लोगों पर, वरन पृथ्वी के सभी राज्यों पर (व्यव. 10:14; दानिय्येल 4:17, 25, 32)। इस धारणा को व्यक्त करने की एक विधि है यह कहना कि परमेश्वर "समस्त इतिहास का शासक है।"[15] वह सबसे सामर्थी साम्राज्यों को भी अपनी इच्छा को पूरा करने के यंत्र बनाता है, अपने लोगों को दण्ड देने के लिए भी (देखें हबक्कूक 1-3)। वह "न्यायी और पवित्र शासक" है जो "संचालन, शासन और मार्गदर्शन करता है (देखें 2 राजा 19:25, 28; यहेजकेल 38:3-4, 10-11, 16; 39:2-3)।"[16]

परमेश्वर जातियों को उत्तरदायी ठहराता है। मिस्र को दण्ड दिया गया परमेश्वर के लोगों को बन्दी बनाने, उनके साथ दुर्व्यवहार करने, इस्राएली शिशुओं का वध करने, और उसके राजा की कठोर मनोवृत्ति के लिए (4:22, 23)। परमेश्वर ने अन्य राज्यों को भी उत्तरदायी ठहराया सभी मनुष्यों के लिए सामान्य नियमों का पालन न करने के लिए - उसके लोगों के साथ दुर्व्यवहार करने और एक दूसरे

के प्रति निर्ममता तथा मानवहीनता के लिए (देखें आमोस 1; 2)।[17]

परमेश्वर चाहता है कि उसके लोग अन्य जातियों के साथ न्यायसंगत व्यवहार करें। अब्राहम के वंशजों को औरों के लिए "आशीष का मूल" होना था (उत्पत्ति 12:2)। इस्राएलियों को गैर-इस्राएलियों के साथ विवाह करने या समझौते करने से मना किया गया था, तथा गैर-इस्राएली इस्राएल में भूमि के स्वामी नहीं हो सकते थे और न ही राजा बन सकते थे। वास्तव में, गैर-इस्राएली (वे बाद में अन्यजाति कहलाए) जब इस्राएलियों ने मिस्र छोड़ा, तब उनमें विद्यमान थे (12:38)। इस्राएल के राष्ट्र बनने के समय से ही उनके मध्य में गैर-इस्राएली निवास कर रहे थे, इस बात से प्रकट है कि इस्राएल के "परदेशियों," अर्थात विदेशियों के प्रति व्यवहार को नियंत्रित करने के लिए नियम दिए गए थे (12:48, 49; 20:10; 22:21; 23:9, 12; लैव्य. 19:10)। जैसे कि इस्राएल को आज्ञा दी गई थी कि वे "एक दूसरे से अपने समान प्रेम रखें" (लैव्य. 19:18), वैसे ही लोगों को भी कहा गया था कि वे "[परदेशियों से] अपने समान प्रेम करें" (लैव्य. 19:34)। मूलतः, जो नियम इस्राएलियों पर लागू थे वही उन "परदेशियों" पर भी लागू थे जो उनके मध्य में रहते थे (12:49; गिनती 15:30; 35:15)।

बाद के समयों में, यहूदियों में परम्पराएँ विकसित हो गईं जो अन्यजातियों को अशुद्ध दिखाती थीं। यहूदी, जहाँ तक संभव हो अन्यजातियों से दूर रहते थे, और विश्वासी यहूदी अन्यजातियों के साथ भोजन भी नहीं करते थे। ऐसी परम्पराएं परमेश्वर की व्यवस्था का भाग नहीं थीं। मूसा की व्यवस्था इस पूर्वानुमान के साथ थी कि अविश्वासी सदा ही परमेश्वर के लोगों के मध्य में रहेंगे और आवश्यक करती थीं कि परमेश्वर के लोग उन से वैसा ही अच्छा व्यवहार करें जैसा कि वे परस्पर करते थे।

परमेश्वर चाहता है कि सभी राष्ट्र उसे जानें और उसकी उपासना करें। परमेश्वर ने फ़िरौन को विपत्तियों में से होकर जीवित रहने दिया - और अंततः सभी दस विपत्तियों को मिस्र पर लाया - ताकि राजा को अपनी सामर्थ्य दिखा सके और अपना नाम "सारी पृथ्वी पर" प्रसिद्ध करे (9:16)। निर्गमन में परमेश्वर के महान सामर्थी कार्य अन्य स्थानों के लोगों को भी ज्ञात हो गए (यहोशू 2:9, 10), परिणामस्वरूप, परमेश्वर का नाम "सारी पृथ्वी पर" प्रसिद्ध हो गया। परमेश्वर की योजना थी कि "भूमण्डल के सारे कुल" अब्राहम के वंश द्वारा आशीष पाएंगे (उत्पत्ति 12:3)। इस्राएल वह राष्ट्र बना जिसमें होकर यह योजना पूरी होनी थी। परमेश्वर ने इस्राएल को चुना कि वह "अन्यजातियों के लिये ज्योति" ठहरे (यशा. 49:6) जिससे कि परमेश्वर के लोगों के द्वारा अन्य भी उसे जान पाएँ जो "ईश्वरों का परमेश्वर और प्रभुओं का प्रभु है" (व्यव. 10:17)। अन्ततः, परमेश्वर ने जगत के उद्धारकर्ता को संसार में भेजने के लिए इस्राएल का प्रयोग किया।

उपसंहार। यदि हम यह विचार रखते हैं कि परमेश्वर केवल यहूदियों से सरोकार रखता था तो हम पुराने नियम को गलत समझते हैं। परमेश्वर ने अन्य राष्ट्रों से भी प्रेम किया (योना 1-4), और वह चाहता था कि यहूदी वे माध्यम हों जिनके द्वारा अन्य उसे जानने पाएँ। यदि यहूदियों का उत्तरदायित्व था कि वे

"अन्यजातियों के लिये ज्योति" ठहरें, तो यही उत्तरदायित्व आज हम पर और कितना अधिक है? परमेश्वर की राष्ट्रों के प्रति चिंता, फिर, आज हमारे लिए सेवकाई की बुलाहट है!

परमेश्वर बुराई को विद्यमान क्यों रहने देता है (9:16)

परमेश्वर ने, अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए, फ़िरौन को सत्ता में रहने दिया (9:16)। सबसे महान परमेश्वर मानवजाति पर शासक है और जिसे चाहता है उसे उसके ऊपर स्थापित कर देता है (देखें दानिय्येल 4:17, 25, 32; 5:21)। कभी-कभी परमेश्वर बुराई को विद्यमान रहने देता है या बुरे शासकों को सत्ता में रहने देता है जिससे उसके उद्देश्य पूरे हो सकें। परमेश्वर के उद्देश्य क्या हैं? वह चाहता है कि सारे संसार में लोग उसकी सामर्थ्य को जानें और उसका नाम प्रसिद्ध हो।

फ़िरौन की सेवा में विश्वासी (9:20)

"फ़िरौन के कर्मचारियों में से जो लोग यहोवा के वचन का भय मानते थे" (9:20)। सम्भवतः ये विश्वासी फ़िरौन के निकट के परामर्शदाताओं में से थे, क्योंकि शब्द "कर्मचारी" पुस्तक में इसी प्रकार प्रयोग हुआ है (देखें 7:10, 20; 8:3, 4)। नए नियम में, कुछ "पवित्र लोग" सदस्य थे "कैसर के घराने" के (फिलि. 4:22)। हमें यह नहीं मान लेना चाहिए कि जिन्हें हम शत्रु समझ लेते हैं (जैसा कि इस्राएलियों ने मिस्रियों को देखा होगा) या वे जो अधिकारी होने की श्रेणी के हैं वे परमेश्वर के वचन के सत्य द्वारा कायल अथवा दोषी होने का बोध रखने वाले नहीं हो सकते हैं।

फ़िरौन का अपश्चातापी होना (9:27-35)

ओलों की विपत्ति के बाद, फ़िरौन ने अपना पाप माना, और अपने लोगों का भी। परमेश्वर ने सदा ही चाहा है कि लोग अपने पापी होने को पहचानें और उसका अंगीकार करें (भजन 32:1-5; 51:1-4; लूका 15:18; 18:13; याकूब 5:16; 1 यूहन्ना 1:9)। परन्तु फ़िरौन के अंगीकार में कुछ गलत था। हो सकता है कि वह पूरी निष्ठा के साथ न हो, या उसका उद्देश्य गलत हो। उसने अपना पाप अपने कष्ट के कारण माना हो। उसका अंगीकार चाहे निष्ठा के साथ था या नहीं, लेकिन उसके जीवन में कोई परिवर्तन नहीं आया। तुरंत ही वह अपने पुरानी बातों की ओर लौट गया। परमेश्वर को प्रसन्न करने वाला होने के लिए, पापों के अंगीकार के साथ पश्चातापी भी होना चाहिए और उससे व्यवहार में परिवर्तन भी आना चाहिए (लूका 3:10-14; 2 कुरि. 7:9, 10)।

समाप्ति नोट्स

[1]जे. फिलिप हयात, *एक्सोडस,* द न्यू सेंचुरी बाइबल कमेंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. अर्डसमैन पब्लिशिंग को., 1971), 116. [2]जॉन जे. डेविस, *मोज़ेस एंड गॉड्स ऑफ़ इजिप्ट:* स्टडीज इन एक्सोडस, 2 डी एड. (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1986), 119.

[3]उपरोक्त। नहूम एम. सारना, *एक्सप्लोरिंग एक्सोडसः दि ओरीजिन्स आफ बिब्लिकल इजराएल* (न्यू यॉर्कः शोकन बुक्स, 1996), 72; आर. एलेन कोल, *एक्सोडसः एन इन्ट्रोडक्शन एण्ड कमेंट्री,* टिंडेल ओल्ड टेस्टामेंट कमेंट्रीज (डॉनर्स ग्रूव, इलिनोयः इंटर-वार्सिटी प्रेस, 1973), 96. [4]जॉन आई, डरहम, *एक्सोडस,* वर्ड बिब्लिकल कमेंट्री, वॉल्यूम 3 (वाको, टेक्ससः वर्ड बुक्स, 1987), 118. [5]विल्बर फ़ील्ड्स, *एक्सप्लोरिंग एक्सोडस,* बाइबल स्टडी टेक्स्टबुक सीरीज (जोप्लिन, मिस्सौरीः कॉलेज प्रेस, 1976), 201-2. [6]यह तथ्य कि इस्राएलियों के पास पशु थे, उस दासता की प्रकृति को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण हो सकता है जिसे उन्होंने सहा था। [7]डरहम, 116. [8]उपरोक्त, 119. [9]विलियम ए. शेल, "फर्नेस," इन *द इंटरनेशनल स्टैण्डर्ड बाइबल इनसाइक्लोपीडिया,* रिवाइज्ड एडिशन, एड. जेफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिली (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगनः विलियम अड्र्समैन पब्लिशिंग को., 1982), 2:371. [10]एलेग्जेंडर मेकेलिस्टर एंड आर. के. हैरिसन, "बॉईल," इन *द इंटरनेशनल स्टैण्डर्ड बाइबल इनसाइक्लोपीडिया,* रिवाइज्ड एडिशन, सम्पादक जेफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिली (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगनः विलियम अड्र्समैन पब्लिशिंग को., 1979), 1:532.

[11]वाल्डमर जेनज़ेन, *एक्सोडस,* बिलीवर्स चर्च बाइबल कमेंट्री (स्कॉटडेल, पेंसिल्वेनियाः हेराल्ड प्रेस, 2000), 126. [12]डरहम, 129. [13]फ़िरौन किन पापों का दोषी था? निश्चय ही यह घमण्ड होगा, जिसने उसे अनाज्ञाकारी बनाया। यदि यह व्याख्या सही है, तो इसका परिणाम यह निष्कर्ष होगा कि पुराने नियम में भी परमेश्वर की आशा थी कि सभी लोग - अविश्वासी जातियों से भी और इस्राएली भी - उसके आज्ञाकारी रहें। [14]डब्ल्यू. एच. गिस्पेन, *एक्सोडस,* ट्रांस. एड वैन डेर मास, बाइबल स्टूडेंट्स कौमेंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगनः रीजेंसी रेफेरेंस लाइब्रेरी, जोंडरवैन पबलिशिंग हाउस, 1982), 103. [15]*ईर्डमैंस हैंडबुक ऑफ द बाइबल,* सम्पादक डेविड ऐलेक्जैंडर एण्ड पैट ऐलेक्जैंडर (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगनः विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग को., 1973), 372 में जे. एलेक मोट्येर, "द प्रोफेट्स।" [16]उपरोक्त। [17]डग्लस एस. हाफमैन ने परमेश्वर के अपने लोगों के अतिरिक्त राष्ट्रों के साथ व्यवहार को इस प्रकार से संक्षिप्त किया: "परमेश्वर अविश्वासी अन्यजाति राष्ट्रों पर भी सार्वभौमिकता लागू करता है जिसके अन्तर्गत उन्हें इस्राएल को अनुशासित करने का माध्यम बनाने (हबक्कूक) और उन्हें पश्चाताप के लिए आह्वान करने (योना) और उन पर न्याय घोषित करने (नहूम, ओबद्याह) के लिए प्रयोग करता है।" (डग्लस एस. हाफमैन, "जेन्टाइल" इन *द ईर्डमैंस डिक्शनरी ऑफ द बाइबल,* एड. डेविड नोएल फ्रीडमैन [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगनः विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग को., 2000], 494-95.)